विशारद द्वितीय वर्ष

तबला- पखावज

पूर्णांक:400, **न्यूनतम**:180

क्रियात्मक:250; (**मौरिवक**:200+**मंच प्रदर्शन**:50)

न्यूनतम:128

शास्त्र:150, **न्यूनतम**:52:(26+26)

प्रथम प्रश्न-पत्र

शास्त्र:-

1) पं. भातखंडे एवम् पं. पलुस्कर താललिपि पद्धतियों का विस्तृत अध्ययन|
2) ताल के दश प्राणों का संक्षिप्त अध्ययन तथा क्रिया, अंग, जाति तथा यति का विस्तृत अध्ययन|
3) कर्नाटक एवम् उत्तर भारतीय ताल पद्धति का अध्ययन|
4) भारतीय संगीत में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों की पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों के साथ तुलना|
5) लय तथा लयकारी के अंतर का ज्ञान तथा निम्नलिखित तालों में आड, कुआड और बिआड लयकारी की बंदिशों कों सम से समतक काललिपि में लिखना|

   (1) त्रिताल (2) झपताल (3) धमार (4) सूलताल
6) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की उदाहरण सहित व्याख्या:

   उठान, त्रिपल्ली एवम् चौपल्ली गत, फरमाईशी गत, फरमाईशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, रौ, लग्गी, लडी तथा किस्म|
7) भारतीय शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोकसंगीत में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित वाद्यों का विवरण:

   तानपुरा, हारमोनियम, पखावज, मृदंगम, ढोलक, ढोलकी(नाल) खोल, संबल, गुदुम, एकतारा, तविल, शहनाई|

द्वितीय प्रश्न-पत्र

1) तबला/पखावज वाद्य का भारतीय संगीत में स्थान महत्त्व एवम उपयोगिता तथा तबला/पखावज की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित विभिन्न मतों की समीक्षा|
2) धा) पेशकार, कायदा, रेला एवम गत इन वादन प्रकारों के रचना सिद्धांत|

   धीं) ठेका, प्रस्तार, रेला, एवं गत परन इन वादन प्रकारों के रचना सिद्धांत|
3) तबला तथा पखावज वादन में प्रयुक्त होने वाले वर्णो के निकास की विस्तृत जानकारी|
4) शास्त्रीय, उप-शास्त्रीय और सुगम संगीत के साथ तबला/पखावज की संगति के सिद्धांतो का अध्ययन|
5) पखावज के विभिन्न घरानों की जानकारी|
6) अजराडा, फरूखाबाद एवम बनारस घरानों की वादन विशेषतायें|
7) एकल तबला वादन:-

   अ) वादन प्रकारों की प्रस्तुति का क्रम,

ब) प्रभाव कारक प्रस्तुतिकरण के गुणतत्त्व,

क) पढंत की आवश्यकता|

8) ताल निर्माण के नियम

9) निम्नलिखित वादकों का जीवन परिचय परिचय तथा सांगीतिक योगदान|

उ.नत्थुखाँसाहब, उ.शम्भु खाँ, उ.वाजीद हुसेन, उ.आबीद हुसेन, उ.चुडीया ईमाम बक्ष, पं.गोविंदराव बहाणपूरकर, पं.पर्वतसिंह, पं.अयोध्याप्रसाद|

क्रियात्मक:

(तबला के विद्यार्थी) :-

1) त्रिताल में निम्नानुसार वादन

अ) दिल्ली अथवा फरूखाबाद घराने का पेशकार विस्तार पूर्वक बजाना|

ब) 'त्रक' शब्द युक्त चतुस्र एवम त्रिस्र जाति के एक-एक कायदे को छह पलटे तथा तिहाई सहित बजाना|

क) 'धातंग घेतग' इस शब्द समूह युक्त त्रिस्र जाति के एक कायदे का, छह पलटे तथा तिहाई सहित वादन|

ड) 'गेगेतीट' अथवा 'गेगेनागे' शब्द युक्त कायदा, छह पलटे तिहाई सहित बजाना|

(पखावज के विद्यार्थी) :-

अ) चौताल, धमार, सूलताल, तीव्रा, अदिताल, में कुदऊसिंह, तथा नाना पानसे घराने की 2-2 बंदिशों की पढंत एवं वादन|

ब) उपर्युक्त मे से किन्ही दो तालों में धिरधिर एवं धिडकना रेले, पल्टे का अपेक्षित तैय्यारी के साथ वादन|

क) उपर्युक्त तालों में एक एक कमाली चक्रदार परन का वादन

ड) आदिताल तथा धमार मे दो दो बेदम तिहाईयाँ तथा 1 1/2 मात्रा के दमयुक्त सम संख्या तक का वादन|

2) रेला:-

अ) धिरधिर' शब्द युक्त रेले का पाच पलटों एवम् तिहाई सहित अपेक्षित तैयारी में वादन|

ब) 'दिंगनग' शब्द समुह युक्त पाच पलटे, तिहाई सहित वादन|

3) गत:-

दो शुद्ध गतें (तिहाई सहित), दो चक्रदार गतें तथा दो त्रिपल्ली गतों का पढंत के साथ वादन

4) तिहाई:-

दो बेदम तथा दो 1 1/2 मात्राओं के दमयुक्त सम से सम युक्त वादन

5) निम्नलिखित तालों की दुगुन तिगुन व चौगुन हाथ से ताल देकर पढना तथा बजाना:-

एकताल झूमरा, सूलताल, धमार.

6) निम्नलिखित तालों मे से किसी एक ताल में 10 मिनीट का एकल वादन(परीक्षक के निर्देशानुसार वादन की प्रस्तुति करना) मत्तताल रूद्रताल, आडाचौताल

7) तबला/पखावज सुर में मिलाना, बाद मे आधा सुर चढाना या उतारकर मिलाना|

मंचप्रदर्शन:-

1) विद्यार्थी के इच्छानुसार 30 मिनिट तक स्वतंत्र तबला/पखावज वादन करने की क्षमता|

2) दीपचन्दी, कहरवा अथवा दादरा ताल में सुंदर लग्गियाँ

अंकपत्रिका:

सूचना: १) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 60 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है|

२) विद्यार्थी को सभी वादन लहरा के साथ साथ करना होगा|

३) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पूछे जाएँगे|

४) मंच प्रदर्शन निमंत्रिकों के सम्मुख स्वतंत्र रूपसे होगा, जिसके लिए अतिरिक्त समय तथा 50 अंक निर्धारित किये गये है|

1) त्रिताल मे इस वर्ष के पाठ्यक्रमानुसार वादन करने की क्षमता	-	55 अंक
2) धिरधिर एवं "दिंगनग" इन शब्द समूहों से युक्त रेले का पल्टों एवं तिहाई सहित वादन	-	20 अंक
3) दो शुद्ध, दो चक्रदार तथा दो त्रिपल्ली गतों का पढंत के साथ वादन	-	30 अंक
4) दो बेदम तथा दो 1 1/2(डेढभाग) मात्रा की दम युक्त समसे सम तक तिहाई बजाने का अभ्यास	-	15 अंक
5) पिछले पाठ्यक्रम के तालों के अतिरिक्त एकताल, झूमरा, सूलताल तथा धमार ताल की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन हाथ से ताली देकर पढना तथा बजाना	-	15 अंक
6) किसी एक ताल मे परीक्षक के निर्देशानुसार एकल वादन मत्तताल (9) रुद्रताल (11) आडा चौताल (14)	-	40 अंक
7) साथ संगत का अभ्यास	-	15 अंक
8) वाद्य को स्वर में मिलाना	-	10 अंक
कुल मौखिक	-	200 अंक

मंच प्रदर्शन:

1) किसी ताल में 30 मिनिट का स्वतंत्र तबला वादन	-	35 अंक
2) दीपचन्दी, कहरवा तथा दादरा में कलात्मक लग्गियाँ	-	15 अंक
कुल	-	50 अंक